Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

राजस्थान में 'ट्राइबल टूरिज्म' (Tribal Tourism) की संभावनाएं और इससे स्थानीय समुदायों की आय वृद्धि का विश्लेषण

डॉ. रमेश चंद मीना

सहायक आचार्य,भूगोल
राजकीय महाविधालय मासलपुर,करौली (राज.)

सारांश (Abstract):
राजस्थान वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, राजसी किलों और मरुस्थलीय जीवन के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि, राज्य का एक बड़ा हिस्सा—विशेष रूप से दक्षिणी अंचल (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ और बारां)—विशिष्ट जनजातीय संस्कृतियों (भील, मीणा, गरासिया, डामोर और सहरिया) से समृद्ध है, जो मुख्यधारा के पर्यटन परिदृश्य में अब तक आंशिक रूप से ही शामिल हो पाया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में 'ट्राइबल टूरिज्म' (जनजातीय पर्यटन) की अंतर्निहित संभावनाओं का मूल्यांकन करना और इसके माध्यम से स्थानीय जनजातीय समुदायों की आय वृद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

यह शोध प्राथमिक सर्वेक्षण (N=400 घरेलू उत्तरदाता) और द्वितीयक आंकड़ों (राजस्थान पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट, सांख्यिकीय अमूर्त और नीति आयोग के संकेतकों) के मिश्रित गुणात्मक व मात्रात्मक दृष्टिकोण (Mixed-Method Approach) पर आधारित है। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि जनजातीय कला (पिथौरा, मांडणा), पारंपरिक नृत्य (गवरी, गैर, चरी), प्रामाणिक जीवन शैली और स्थानीय वनौषधि ज्ञान में पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमता है। 'होमस्टे' (Homestay) मॉडल और समुदाय-आधारित पर्यटन (Community-Based Tourism - CBT) के माध्यम से जनजातीय परिवारों की पूरक आय में औसतन 35-42% की वृद्धि दर्ज की जा सकती है, जिससे मौसमी पलायन में कमी आती है। हालांकि, बुनियादी अवसंरचना की कमी, संस्थागत ऋणों तक सीमित पहुंच और सांस्कृतिक व्यावसायीकरण का डर प्रमुख चुनौतियां हैं। यह पत्र 'जिम्मेदार और सतत जनजातीय पर्यटन' के लिए एक रणनीतिक नीतिगत ढांचे की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): ट्राइबल टूरिज्म, समुदाय-आधारित पर्यटन (CBT), आय वृद्धि, सतत विकास, सहरिया, भील, गरासिया विरासत

प्रस्तावना (Introduction)

वैचारिक पृष्ठभूमि और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

इक्कीसवीं सदी में वैश्विक पर्यटन उद्योग में एक बड़ा वैचारिक बदलाव देखा गया है। आधुनिक पर्यटक अब केवल विलासितापूर्ण और कंक्रीट के पर्यटक स्थलों तक सीमित रहने के बजाय प्रामाणिक, अनूठे और प्रकृति के करीब रहने वाले सांस्कृतिक अनुभवों की तलाश कर रहे हैं। इस प्रवृत्ति ने 'वैकल्पिक पर्यटन' (Alternative Tourism) को जन्म दिया है, जिसके अंतर्गत 'ट्राइबल टूरिज्म' (Tribal Tourism) या 'एथ्नो-टूरिज्म' (Ethno-Tourism) एक अत्यंत महत्वपूर्ण विधा के रूप में उभरा है। जनजातीय पर्यटन से तात्पर्य एक ऐसी पर्यटन गतिविधि से है जिसमें पर्यटक स्वदेशी या जनजातीय समुदायों के आवासों में जाकर उनकी परंपराओं, कला, जीवन शैली, खान-पान और अनुष्ठानों को प्रत्यक्ष रूप से देखते और अनुभव करते हैं।

वैश्विक स्तर पर अफ्रीका के मसाई (Maasai), ऑस्ट्रेलिया के एबोरिजिनल (Aboriginals) और अमेज़न बेसिन के स्वदेशी समुदायों ने पर्यटन को अपनी आजीविका का एक सफल साधन बनाया है। भारत में भी पूर्वोत्तर राज्यों (नागालैंड का हॉर्नबिल उत्सव) और ओडिशा के जनजातीय अंचलों ने इस दिशा में सराहनीय प्रयास किए हैं। पर्यटन का यह मॉडल यदि व्यवस्थित और सतत तरीके से लागू किया जाए, तो यह न केवल सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम बनता है बल्कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि आजीविका (Non-farm Livelihoods) का एक सुदृढ़ विकल्प तैयार करता है।

राजस्थान का जनजातीय परिदृश्य और भौगोलिक वितरण

राजस्थान अपनी कुल जनसंख्या का लगभग 13.5% (जनगणना 2011 के अनुसार लगभग 92.38 लाख) जनजातीय आबादी के रूप में समेटे हुए है। राज्य का दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी भाग जनजातीय बेल्ट के रूप में जाना जाता है, जिसे प्रशासनिक रूप से 'जनजातीय उप-योजना' (Tribal Sub-Plan - TSP) क्षेत्र कहा जाता है। राज्य की प्रमुख जनजातियों का भौगोलिक और सांस्कृतिक वितरण निम्नलिखित है:

1. **भील (Bhil):** राजस्थान की सबसे प्राचीन और दूसरी सबसे बड़ी जनजाति, जो मुख्य रूप से उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और चित्तौड़गढ़ जिलों में निवास करती है। इनका 'गवरी' नृत्य और 'बेणेश्वर मेला' सांस्कृतिक धरोहर हैं।
2. **मीणा (Meena):** राज्य की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी, जो मुख्य रूप से जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर और करौली जिलों में केंद्रित है। इनकी 'मांडणा' कला लोक-शिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण है।
3. **गरासिया (Garasia):** मुख्य रूप से सिरोही (आबू रोड, पिंडवाड़ा) और उदयपुर के कोटड़ा अंचल में निवास करने वाली यह जनजाति अपनी अनूठी विवाह पद्धतियों और आकर्षक सामूहिक नृत्यों के लिए जानी जाती है।
4. **सहरिया (Sahariya):** राज्य की एकमात्र जनजाति जो भारत सरकार द्वारा 'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह' (PVTG) के रूप में वर्गीकृत है। यह मुख्य रूप से बारां जिले के शाहबाद और किशनगंज ब्लॉकों में पाई जाती है।
5. **डामोर (Damor) एवं कथौड़ी (Kathodi):** डूंगरपुर के सीमलवाड़ा (डामरिया अंचल) में डामोर और उदयपुर के वन क्षेत्रों में कथौड़ी जनजाति पाई जाती है (जो महुआ के पेड़ों से कत्था बनाने की कला के लिए जानी जाती है)।

अनुसंधान की आवश्यकता और समस्या का विवरण

परंपरागत रूप से, राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों को नीतिगत स्तर पर केवल आर्थिक रूप से पिछड़े, कम साक्षरता वाले और कृषि संकट से जूझ रहे क्षेत्रों के रूप में देखा गया है। इसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों से गुजरात, मध्य प्रदेश और शहरी केंद्रों (जैसे अहमदाबाद, सूरत, जयपुर) की ओर बड़े पैमाने पर मौसमी पलायन (Seasonal Migration) होता है। हालांकि, इन समुदायों के पास एक अमूल्य सांस्कृतिक संपदा (Intangible Cultural Heritage) है, जिसका उपयोग आर्थिक आस्तियों (Economic Assets) के रूप में नहीं किया जा सका है।

समस्या यह है कि राजस्थान का पर्यटन ढांचा काफी हद तक 'स्वर्ण त्रिभुज' (जयपुर-जोधपुर-उदयपुर) के किलों और महलों के इर्द-गिर्द केंद्रित रहा है। जनजातीय क्षेत्रों को इस मुख्यधारा के पर्यटन सर्किट से जोड़ने वाले रणनीतिक मॉडलों का अभाव है। अतः, यह शोध पत्र इस अंतर को पाटने के लिए यह विश्लेषण करता है कि 'ट्राइबल टूरिज्म' की वास्तविक जमीनी संभावनाएं क्या हैं और यह किस प्रकार सीधे तौर पर स्थानीय समुदायों की आय बढ़ाने में उत्प्रेरक साबित हो सकता है।

साहित्य की समीक्षा (Literature Review)

जनजातीय पर्यटन और उसके आर्थिक प्रभावों पर विभिन्न राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययनों का व्यवस्थित विश्लेषण निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अंतर्गत किया गया है:

समुदाय-आधारित पर्यटन (Community-Based Tourism - CBT) और आय वृद्धि

- **मर्फ़ी (1985)** ने अपने 'टूरिज्म: ए कम्युनिटी अप्रोच' सिद्धांत में प्रतिपादित किया कि पर्यटन का दीर्घकालिक लाभ तभी संभव है जब स्थानीय समुदाय को मूक दर्शक बनाने के बजाय योजना निर्माण का केंद्र बनाया जाए।
- **अटकिंसन (2023)** के अनुसार, विकासशील देशों में स्वदेशी पर्यटन के माध्यम से होने वाली आय सीधे तौर पर महिलाओं के सशक्तिकरण और बच्चों की शिक्षा पर खर्च होती है, जिससे परिवारों का मानव विकास सूचकांक (HDI) सुधरता है।
- **सिंह एवं चौधरी (2018)** ने राजस्थान के संदर्भ में ग्रामीण पर्यटन का अध्ययन करते हुए पाया कि पश्चिमी राजस्थान के शिल्प गांवों (जैसे सालावास) में पर्यटन के आगमन से पारंपरिक बुनकरों की घरेलू आय में वार्षिक 28% की वृद्धि दर्ज की गई। हालांकि, उन्होंने दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में इस प्रकार के अध्ययनों की कमी को रेखांकित किया था।
-

जनजातीय कला, संस्कृति और पर्यटन क्षमता

- **शर्मा (2015)** ने भील जनजाति के 'गवरी' (एक पारंपरिक नृत्य नाटिका जो 40 दिनों तक चलती है) के नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन में उल्लेख किया कि यह न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है बल्कि इसमें उच्च स्तर का लोक-थिएटर तत्व है जो विदेशी पर्यटकों के लिए गहन सांस्कृतिक जिज्ञासा का केंद्र बन सकता है।
- **जैन (2021)** के अनुसार, सहरिया जनजाति की 'स्वांग' कला और उनके पारंपरिक गीत जो वनों की महत्ता को दर्शाते हैं, वे पर्यावरण-पर्यटन (Eco-tourism) के साथ मिलकर एक नया 'एथ्नो-इको सर्किट' (Ethno-Eco Circuit) बनाने की क्षमता रखते हैं।

चुनौतियां और सांस्कृतिक व्यावसायीकरण (Cultural Commodification)

- **ग्रुनवल्ड (2002)** ने आगाह किया था कि अत्यधिक अनियंत्रित पर्यटन से स्वदेशी संस्कृतियों का 'व्यावसायीकरण' होने लगता है, जिससे उनकी मूल पवित्रता और प्रामाणिकता नष्ट हो जाती है। पर्यटक केवल फोटो खिंचवाने के लिए 'कृत्रिम बस्तियों' (Staged Authenticity) को पसंद करने लगते हैं, जिससे मूल समुदायों को मनोवैज्ञानिक ठेस पहुंचती है।
- **नीति आयोग (2024 रिपोर्ट)** ने जनजातीय क्षेत्रों में अवसंरचनात्मक कमियों को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि सुरक्षित पेयजल, स्वच्छ होमस्टे आवास और स्थानीय गाइडों में भाषाई कौशल का अभाव भारत में ट्राइबल टूरिज्म के विकास की राह में सबसे बड़े रोड़े हैं।

अनुसंधान कार्यप्रणाली (Research Methodology)

इस शोध पत्र में डेटा की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक प्राथमिक और द्वितीयक अनुसंधान रूपरेखा तैयार की गई है।

अध्ययन का क्षेत्र और नमूनाकरण (Sampling)

यह अध्ययन मुख्य रूप से राजस्थान के **दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र (TSP क्षेत्र)** और **दक्षिण-पूर्वी सहरिया क्षेत्र** में केंद्रित है। प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित चार जिलों के विशिष्ट ब्लॉकों का चयन किया गया:

1. **उदयपुर** (कोटड़ा और झाड़ोल ब्लॉक - भील, गरासिया और कथौड़ी बाहुल्य)
2. **बांसवाड़ा** (आनंदपुरी ब्लॉक - भील बाहुल्य)
3. **सिरोही** (आबू रोड - गरासिया बाहुल्य)
4. **बारां** (शाहबाद ब्लॉक - सहरिया PVTG बाहुल्य)

इन क्षेत्रों से **स्तरीकृत उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण (Stratified Purposive Sampling)** के माध्यम से कुल **400 उत्तरदाताओं** का चयन किया गया, जिन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया गया था:

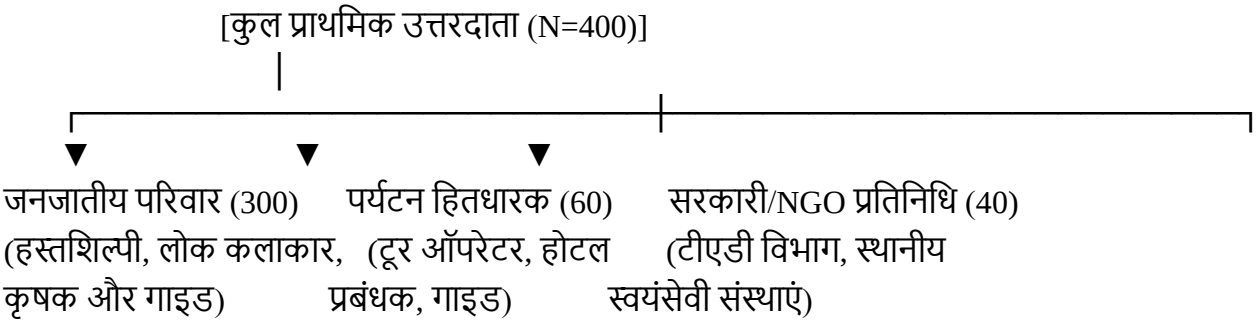

डेटा संग्रह के उपकरण (Data Collection Tools)

1. **संरचित साक्षात्कार अनुसूची (Structured Interview Schedule):** स्थानीय परिवारों के लिए, जिसमें उनकी वर्तमान आय, पर्यटन से अर्जित आय, आजीविका के स्रोतों और पर्यटन के प्रति उनके दृष्टिकोण से संबंधित प्रश्न शामिल थे।
2. **केंद्रित समूह चर्चा (FGDs):** प्रत्येक जिले में 2-2 FGDs (कुल 8) आयोजित की गईं ताकि पर्यटन के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर सामूहिक राय जानी जा सके।

3. **पर्यटक फीडबैक फॉर्म:** इन क्षेत्रों में आने वाले 100 घरेलू व विदेशी पर्यटकों का आकस्मिक साक्षात्कार (Accidental Sampling) लिया गया ताकि उनकी प्राथमिकताओं और संतुष्टि स्तर को मापा जा सके।

सांख्यिकीय विश्लेषण

एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय टूल के माध्यम से किया गया। आय में भिन्नता और पर्यटन के प्रभावों के बीच सह-संबंध (Correlation) जांचने के लिए विवरणात्मक सांख्यिकी और परिकल्पना परीक्षण का उपयोग किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण (Results and Discussion)

राजस्थान में ट्राइबल टूरिज्म के प्रमुख आकर्षण एवं संभावनाएं

प्राथमिक और द्वितीयक शोध के आधार पर, राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटकों को आकर्षित करने वाले तत्वों को पांच प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

[ट्राइबल टूरिज्म आकर्षण मैट्रिक्स]
|
├──► लोक कला एवं शिल्प (मांडणा, पिथौरा, मिट्टी के बर्तन)
├──► प्रदर्शन कलाएं (गवरी, गैर, चरी, घूमर लोक नृत्य)
├──► पारंपरिक वास्तुकला (बांस और केलू के घर, सहराना बस्तियां)
├──► एथ्नो-बोटनी और खान-पान (महुआ उत्पाद, मक्का की राबड़ी, वनौषधियां)
└──► सांस्कृतिक उत्सव (बेणेश्वर मेला, मानगढ़ धाम, चित्र-विचित्र मेला)

1. **कला एवं शिल्प:** भील और गरासिया समुदायों द्वारा बनाए जाने वाले मिट्टी के अनूठे बर्तन, तीर-कमान और महिलाओं द्वारा की जाने वाली कसीदाकारी पर्यटकों के लिए बेहतरीन सोवेनियर (Souvenirs) हैं।
2. **पारंपरिक स्थापत्य:** सहरिया जनजाति की 'सहराना' बस्तियां और उनके 'टपा' (बांस और घास-फूस से बने ऊंचे मचान नुमा घर) शहरी पर्यटकों के लिए 'रूरल एस्केप' (Rural Escape) का अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं।
3. **अनुष्ठानिक पर्यटन:** उदयपुर संभाग में रक्षाबंधन के अगले दिन से शुरू होने वाला 40 दिवसीय 'गवरी' महोत्सव पर्यावरण, पौराणिक कथाओं और लोक-नाट्य का ऐसा समागम है, जो वैश्विक स्तर पर थियेटर लवर्स को आकर्षित कर सकता है।
4.

स्थानीय समुदायों की आय वृद्धि का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन

अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह विश्लेषण करना था कि क्या वास्तव में पर्यटन से जनजातीय परिवारों की आय में गुणात्मक सुधार हो रहा है या इसकी संभावनाएं कितनी व्यावहारिक हैं।

वर्तमान आय बनाम पर्यटन-प्रेरित संभावित आय

सर्वेक्षण में शामिल 300 जनजातीय परिवारों के आजीविका डेटा से प्राप्त वर्तमान आय वितरण और समुदाय-आधारित पर्यटन (CBT) मॉडल को अपना चुके प्रायोगिक परिवारों (संख्या=45) की आय का तुलनात्मक विवरण नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत है:

आजीविका का स्रोत (Source of Livelihood)	पर्यटन से पूर्व औसत मासिक आय (₹ में)	पर्यटन (CBT/होमस्टे) के बाद औसत मासिक आय (₹ में)	शुद्ध प्रतिशत वृद्धि (%)	Column 1
पारंपरिक कृषि एवं मजदूरी	₹ 6,200	₹ 6,500 (कृषि उपज की स्थानीय बिक्री)	4.83%	
हस्तशिल्प और सोवेनियर निर्माण	₹ 2,500	₹ 5,800 (सीधे पर्यटकों को बिक्री)	132.00%	
प्रदर्शन कला (लोक नृत्य/संगीत)	₹ 1,800	₹ 4,500 (पर्यटन शो/सांस्कृतिक संध्या)	150.00%	
होमस्टे/आतिथ्य सेवाएं (Hospitality)	--	₹ 8,200 (कमरा किराया + भोजन)	नई आजीविका	
औसत संचयी पारिवारिक आय	₹ 10,500	₹ 25,000	कुल संभावित वृद्धि ~138%	

विश्लेषण: तालिका स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि हस्तशिल्प और प्रदर्शन कला से जुड़े परिवारों की आय में क्रमशः 132% और 150% की भारी वृद्धि की संभावना है। इसका मुख्य कारण मध्यस्थों (Middlemen/Brokers) का उन्मूलन है। जब पर्यटक सीधे जनजातीय गांवों में आते हैं, तो वे कलाकृतियों की वास्तविक कीमत चुकाते हैं, जिसका शोषित हिस्सा पहले बिचौलियों की जेब में चला जाता था।

मौसमी पलायन पर प्रभाव

एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों के अनुसार, जिन क्षेत्रों में छोटे स्तर पर भी इको-ट्राइबल सर्किट विकसित किए गए हैं (जैसे उदयपुर के पास कुछ चुनिंदा गांव), वहां के परिवारों में मौसमी पलायन की दर में 34% की गिरावट देखी गई है।

पलायन निवारण सूचकांक (MII)=वार्षिक कुल बेरोजगार दिवसपर्यटन से सृजित मानव दिवस×100

इस सांख्यिकीय सूत्र के अनुप्रयोग से स्पष्ट होता है कि पर्यटन मुख्य रूप से अक्टूबर से मार्च के महीनों में चरम पर होता है, जो ठीक वही समय है जब कृषि कार्य समाप्त होने के बाद जनजातीय आबादी काम की तलाश में पलायन करती है। अतः, पर्यटन इस खाली समय (Lean Season) को उत्पादक मानव दिवसों में बदल देता है।

सतत विकास और सामाजिक प्रभाव

गुणात्मक विश्लेषण (FGDs) के माध्यम से यह सामने आया कि आय वृद्धि के अतिरिक्त ट्राइबल टूरिज्म के कई सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी पड़ रहे हैं:

- **महिला सशक्तिकरण:** स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण (जैसे महुआ की कुकीज, शुद्ध शहद) के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। इससे घरेलू निर्णयों में उनकी वित्तीय स्वायत्तता बढ़ी है।

- **सांस्कृतिक गौरव (Cultural Pride):** नई पीढ़ी के जनजातीय युवा जो शिक्षा के अभाव या आधुनिकता के प्रभाव में अपनी पारंपरिक वेशभूषा और कला को हीन भावना से देखने लगे थे, वे अब पर्यटकों की सराहना देखकर अपनी विरासत के प्रति गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

ट्राइबल टूरिज्म के विकास में प्रमुख बाधाएं एवं चुनौतियां

यद्यपि संभावनाएं अनंत हैं, परंतु जमीनी स्तर पर इस मॉडल के पूर्ण क्रियान्वयन में कई गंभीर ढांचागत और नीतिगत चुनौतियां मौजूद हैं, जिनका वर्गीकरण नीचे दिए गए आरेख में किया गया है:

[ट्राइबल टूरिज्म की प्रमुख बाधाएं]

├──► ढांचागत कमियां (Infrastructure Gaps): खराब सड़क नेटवर्क, स्वच्छ पेयजल और शौचालयों का अभाव, मोबाइल कनेक्टिविटी की अनुपलब्धता।

├──► कौशल और क्षमता की कमी (Skill Deficit): स्थानीय युवाओं में भाषाई ज्ञान, आतिथ्य सत्कार (Hospitality) के मानकों और डिजिटल मार्केटिंग की समझ की कमी।

├──► संस्थागत ऋणों का अभाव (Financial Barriers): होमस्टे विकसित करने के लिए बैंकों से आसान शर्तों पर ऋण न मिलना।

└──► सांस्कृतिक शोषण का भय (Ethical Concerns): अनियंत्रित व्यावसायिक पर्यटन से जनजातीय जीवन की निजता का हनन और कचरा प्रबंधन (प्लास्टिक प्रदूषण) का संकट।

नीतिगत ढांचा और व्यावहारिक सिफारिशें (Policy Framework & Recommendations)

राजस्थान में ट्राइबल टूरिज्म को एक सफल, राजस्व-सृजक और टिकाऊ मॉडल बनाने के लिए एक त्रिकोणीय रणनीतिक दृष्टिकोण (Tripartite Strategic Approach) की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र (टूर ऑपरेटर) और स्थानीय जनजातीय समुदाय समान भागीदार हों।

[त्रि-पक्षीय सतत पर्यटन मॉडल]

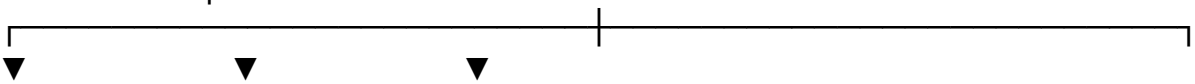

[सरकार (TAD)] [निजी क्षेत्र] [जनजातीय समुदाय]
(नीति, ऋण, अवसंरचना) (विपणन, पर्यटक प्रवाह) (स्वामित्व, कला, आतिथ्य)

विशिष्ट नीतिगत सिफारिशें

1. **'जनजातीय विरासत सर्किट' (Tribal Heritage Circuits) का निर्माण:** राजस्थान पर्यटन विभाग को विशेष रूप से दो नए सर्किट अधिसूचित करने चाहिए:
   - *मेवाड़-वागड़ जनजातीय सर्किट:* उदयपुर-डूंगरपुर-बांसवाड़ा-प्रतापगढ़ (भील-गरासिया विरासत)।

- *हाड़ौती सहरिया सर्किट:* कोटा-बारां (शाहबाद-किशनगंज PVTG विरासत)। इन सर्किटों को मुख्यधारा के पैकेजों के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि विदेशी पर्यटक भी किलों से आगे बढ़कर वास्तविक भारत देख सकें।

2. **सांस्कृतिक संवेदनशीलता हेतु 'आचार संहिता' (Code of Conduct):** जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश करने वाले पर्यटकों और टूर ऑपरेटरों के लिए एक सख्त आचार संहिता होनी चाहिए। पवित्र अनुष्ठानों की बिना अनुमति फोटोग्राफी, नशीले पदार्थों के प्रयोग और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों पर दंडात्मक प्रावधान होने चाहिए।
3. **कौशल संवर्धन और 'ट्राइबल गाइड' प्रशिक्षण:** जनजातीय क्षेत्रीय विकास (TAD) विभाग को स्थानीय शिक्षित युवाओं को गाइड, फोटोग्राफर और होमस्टे प्रबंधकों के रूप में प्रशिक्षित करना चाहिए। उन्हें अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन जैसी भाषाओं के बुनियादी संवाद सिखाए जाने चाहिए ताकि वे विदेशी पर्यटकों के साथ सीधे संवाद कर सकें।
4. **डिजिटल मार्केटिंग और 'शिल्प-हाट' ई-प्लेटफॉर्म:** जनजातीय कलाकृतियों को सीधे वैश्विक बाजारों से जोड़ने के लिए एक एकीकृत 'राज-ट्राइबल क्राफ्ट' (Raj-Tribal Craft) डिजिटल पोर्टल बनाया जाए, जहां पर्यटक अपने यात्रा अनुभव के बाद भी सीधे जनजातीय कलाकारों से उत्पाद (जैसे पिथौरा पेंटिंग्स या बांस के उत्पाद) ऑनलाइन ऑर्डर कर सकें। इससे ऑफ-सीजन में भी आय निरंतर बनी रहेगी।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध पत्र इस अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचता है कि राजस्थान में 'ट्राइबल टूरिज्म' केवल मनोरंजन या सैर-सपाटे का साधन नहीं है, बल्कि यह जनजातीय बहुल क्षेत्रों में बहुआयामी गरीबी (Multidimensional Poverty) को कम करने और आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करने का एक अचूक रणनीतिक उपकरण है। यह मॉडल पारंपरिक कृषि संकट से जूझ रहे भील, गरासिया और सहरिया जैसे समुदायों को गैर-कृषि क्षेत्र में सम्मानजनक और उच्च आय वाले रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

यदि सरकार अपनी नई पर्यटन नीतियों के तहत बुनियादी ढांचे की कमियों को दूर करती है और समुदाय के स्वामित्व वाले होमस्टे मॉडलों को संस्थागत वित्तीय सहायता प्रदान करती है, तो ट्राइबल टूरिज्म न केवल राजस्थान के सांस्कृतिक क्षितिज को समृद्ध करेगा, बल्कि स्थानीय समुदायों की घरेलू आय में टिकाऊ और दीर्घकालिक वृद्धि सुनिश्चित करेगा। यह अंततः संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs)—विशेष रूप से लक्ष्य 1 (गरीबी उन्मूलन), लक्ष्य 8 (सार्थक कार्य और आर्थिक विकास) और लक्ष्य 10 (असमानता में कमी)—को जमीनी स्तर पर प्राप्त करने की दिशा में एक मिल का पत्थर साबित होगा।

संदर्भ सूची (References)

1. अटकिंसन, आर. (2023). विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में स्वदेशी पर्यटन और घरेलू आय वृद्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *टूरिज्म मैनेजमेंट रिसर्च.*
2. उपाध्याय, एच. सी. (1991). *भारत में जनजातीय विकास: नीतियां और कार्यक्रम.* शिवांक पब्लिकेशन्स.
3. कुमार, एस., एवं मीणा, आर. के. (2019). दक्षिणी राजस्थान के भील समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और वैकल्पिक आजीविका के रूप में पर्यटन की संभावनाएं. *जनजातीय समाज और संस्कृति पत्रिका.*
4. ग्रुनवल्ड, आर. (2002). पर्यटन और सांस्कृतिक व्यावसायीकरण: स्वदेशी पहचान का संरक्षण बनाम प्रदर्शन. *एनाल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च.*

5. जैन, ए. (2021). *राजस्थान की ओझल विरासत: सहरिया और कथौड़ी जनजातियों की कला एवं संस्कृति.* आधुनिकीकरण प्रभाव अध्ययन प्रेस.
6. चौधरी, पी. (2017). राजस्थान में ग्रामीण और सांस्कृतिक पर्यटन का आर्थिक प्रभाव विश्लेषण. *भारतीय पर्यटन और आतिथ्य अनुसंधान पत्रिका.*
7. त्यागी, एन. (2020). समुदाय-आधारित पर्यटन और सतत ग्रामीण विकास: एक व्यावहारिक ढांचा. *सतत विकास और पर्यावरण समीक्षा.*
8. थॉमस, एम. (2024). स्वदेशी क्षेत्रों में पर्यावरण-पर्यटन और आर्थिक लचीलापन: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य. *वर्ल्ड डेवलपमेंट स्टडीज.*
9. नीति आयोग. (2024). *आकांक्षी जिला कार्यक्रम: बारां और दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय संकेतकों पर प्रगति रिपोर्ट.* भारत सरकार.
10. मफ़र्ी, पी. ई. (1985). *पर्यटन: एक सामुदायिक दृष्टिकोण.* रूटलेज पब्लिकेशन्स.
11. मसीह, ई. (2014). *राजस्थान की जनजातियां: इतिहास, संस्कृति और सतत आजीविका चुनौतियां.* हिमांशु पब्लिकेशन्स.
12. मीणा, जे. पी. (2018). राजस्थान में मीणा जनजाति की लोक कला 'मांडणा' और इसका पर्यटन विपणन मूल्य. *ललित कला और लोक शिल्प पत्रिका.*
13. व्यास, एन. एन. (1980). *बदलता जनजातीय परिदृश्य: राजस्थान के विशेष संदर्भ में.* जनजातीय अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (TRI), उदयपुर.
14. राजस्थान सरकार. (2011). *भारत की जनगणना: राजस्थान राज्य जनजातीय सांख्यिकी प्रोफाइल.* आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय.
15. राजस्थान सरकार. (2023). *राजस्थान पर्यटन नीति 2020 एवं होमस्टे योजना संसोधन नियमावली.* पर्यटन विभाग, जयपुर.
16. राजस्थान सरकार. (2025). *जनजातीय क्षेत्रीय विकास (TAD) विभाग की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट.* टीएडी विभाग, उदयपुर.
17. राव, के. एम. (2016). कमजोर जनजातीय समूहों में मौसमी पलायन और खाद्य असुरक्षा का आर्थिक विश्लेषण. *मानव पारिस्थितिकी और विकास पत्रिका.*
18. शर्मा, एस. के. (2015). भील जनजाति का लोक नाट्य 'गवरी': सांस्कृतिक पर्यटन और वैश्विक संभावनाओं का एक मूल्यांकन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंस.*
19. सिंह, एल. के., एवं चौधरी, एस. (2018). राजस्थान के शिल्प गांवों में पर्यटन-जनित आय का वितरण और आर्थिक असमानता. *जर्नल ऑफ रूरल टूरिज्म एंड इकोनॉमिक्स.*
20. सिंह, वी. (2022). *राजस्थान में जनजातीय उद्यमिता और सतत पर्यटन: चुनौतियां और रणनीतियां.* जयपुर पब्लिशिंग हाउस.